

भारत में कृषि आधारित उद्योगों की वर्तमान चुनौतियां : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

*ज्ञान प्रकाश, **प्रोफेसर शिखा,

सारांश

भारत में अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर हैं। कृषि उत्पादन ने देश के ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह अपनाए गए ग्रामीण विकास मॉडल का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। अधिकतर कृषि क्षेत्र खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों की आसपास स्थित है जो खाद्य सुरक्षा और लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं। कृषि आधारित उद्योग मूल रूप से ऐसे उद्योग होते हैं जो प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप में कच्चे मल के रूप में कृषि उत्पादों का प्रयोग करते हैं। कृषि आधारित उद्योग हमारे देश में प्राचीन काल से ही फल फूल रहे थे परन्तु जब भारत को अंग्रेजों ने अपना गुलाम बनाया तब इन उद्योगों की विकास गति बहुत धीमी हो गई थी। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इन उद्योगों का फिर से एक बार पुनरुत्थान हुआ और वर्तमान में बेहतर सरकारी नीतियों के कारण इन उद्योगों का विकास संभव हो पाया है।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारत की कृषि आधारित उद्योगों की शक्तियों, कमजोरियों, अवसर और खतरे की पहचान करना है। वर्तमान में जब कई देश कुपोषण और संभावित खाद्य संकट से जूझ रहे हैं ऐसे में भारत के कृषि आधारित उद्योग अपने आन्तरिक संघर्षों का सामाधान करके घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बजारों में व्यापारिक अवसर प्राप्त कर रहे हैं। निश्चित रूप से, इस क्षेत्र के सामने कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी इसमें कई प्रकार की शक्तियाँ भी हैं—जैसे प्राचूर मात्र में प्रकृतिक संसाधन, उपयुक्त भौगोलिक और जलवायु स्थितियाँ, कच्चे मल की उपलब्धता, सस्ता श्रम तथा वितरण की संभावनाएं। हालांकि इस उद्योग से जुड़ी कुछ कमजोरियाँ भी हैं जैसे अविकसित अवसंरचना और उत्पादों की निम्न गुणवत्ता। साथ ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा, उपकरणों की अधिक लागत, असंगठित बाजार जैसे खतरों के बावजूद यह उद्योग टिकाऊ बनने की क्षमता रखता है। इस अध्ययन में इन उद्योगों का एक व्यापक SWOT विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : कृषि आधारित उद्योग/व्यवसाय, नीतियाँ, श्रम, योजनाएं, रोजगार, खाद्य संकट, जैविक उद्योग।

* ज्ञान प्रकाश, सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज बरेली।

****प्रोफेसर शिखा**, आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज बरेली। महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

प्रस्तावना

कृषि आधारित उद्योगों का देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि यह ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देते हैं, अधिकांश कृषि आधारित उद्योग खाद्य प्रसंस्करण संयंत्रों के आसपास केंद्रित होते हैं, यह खाद्य सुरक्षा और लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए आवश्यक है। कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवन स्तर को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कृषि आधारित उद्योगों में मूल रूप से कृषि उत्पादों का प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से इस्तेमाल करने वाले उद्योग तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को शामिल किया जाता है। इन उद्योगों में चीनी मिल, आटा मिल, चावल मिल, दाल मिल, अचार उद्योग, बेकरी उद्योग, आदि आते हैं। इन उद्योगों के अंतरगत अन गतिविधियों को भी शामिल किया जाता है जो इनपुट के रूप में कृषि से प्राप्त की जाती है।

यह शोध पत्र भारतीय कृषि व्यवसाय का SWOT विश्लेषण करने का प्रयास करता है। जो व्यवसाय मुख्य रूप से कृषि उत्पादों का उत्पादन करते हैं और जो व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित होते हैं उन्हें ग्रामीण उद्योग कहा जाता है। भारत में ग्रामीण विकास तभी माना जा सकता है जब ग्रामीण संसाधनों पर निर्भर उद्योगों को ग्रामीण क्षेत्रों में मान्यता प्राप्त हो। ग्रामीण उद्यमिता तब ग्रामीण विकास की ओर बढ़ती है जब ग्रामीण उद्यमियों को प्रेरित किया जाता है। ग्रामीण उद्योगों में कृषि आधारित उद्योग, वन आधारित उद्योग, जैविक उद्योग, वस्त्र उद्योग आदि उद्योग शामिल

साहित्य समीक्षा

एस. रत्ना कुमारी और सी. लक्ष्मीकांत रेड्डी (2014) ने कहा है कि भारत की आर्थिक वृद्धि में कृषि आधारित व्यवसायों की भूमिका का व्यापक रूप से दस्तावेजीकरण किया गया है और इसे अधिक

जोर देने की आवश्यकता नहीं है। यह व्यवसाय न्यूनतम निवेश के साथ पर्याप्त रोजगार के अवसर प्रदान कर सकते हैं। कृषि से जुड़ी उत्पादन विधियां सरल होती हैं, और आवश्यक कौशल तथा उपकरण आसानी से उपलब्ध होते हैं।

आर. पशुपति और सी. परमासीवन (2016) ने निष्कर्ष निकाला की कृषि आधारित क्षेत्रों में श्रमिक शक्ति का ग्रामीण निवासियों की सभी श्रेणियों की आय पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत खेतीहर मजदूरों की आय में वृद्धि विशेष रूप से अधिक थी। उत्पादकों को कृषि आधारित व्यवसायों से हुई आय वृद्धि और कृषि क्षेत्र में बढ़ी रोजगार संभावनाओं से प्रत्यक्ष रूप से लाभ हुआ। वहीं कृषि से संबंधित औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार का लाभ मिला।

प्रमोद कुमार (2016) की शोध में उत्तर प्रदेश के एगो प्रोसेसिंग क्षेत्र के विकास, वर्तमान स्थिति, संभावनाओं और चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। यह शोध राज्य की चावल मिलिंग, डेयरी, बागवानी और मांस उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। हालांकि इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं लेकिन अपर्याप्त बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकी तक सीमित पहुंच और लघु स्तर की इकाइयों की अधिकता जैसे कारक इसके विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं।

रेड्डी और कुमार (2020) के अनुसार भारत में कृषि आधारित उद्योगों के लिए विपणन और वितरण प्रणाली का अभाव एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। शोध में यह पाया गया है कि भारतीय कृषि उत्पादों के विपणन के लिए आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर और नेटवर्क की कमी है, जिससे इन उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में निर्यात करना कठिन हो जाता है। छोटे किसान और उत्पादक अपने उत्पादों को उचित मूल्य पर बाजार तक पहुँचने में असमर्थ हैं जिससे उनके उत्पादों की मुल्य श्रृंखला में असंतुलन उत्पन्न होता है।

भारत के कृषि आधारित उद्योगों की वर्तमान चुनौतियां विविध हैं और इनका समाधान एक समग्र दृष्टिकोण से किया जा सकता है। सरकारी नीतियों में सुधार, प्रौद्योगिकी का उपयोग, श्रमिकों के

कौशल विकास और बेहतर विपणन नेटवर्क जैसी पहलों से इन उद्योगों को स्थिरता और विकास की दिशा में अग्रसर किया जा सकता है।

उद्देश्य

1. भारत में कृषि आधारित उद्योगों की संभावनाओं एवं समस्याओं का अध्ययन करना।
2. भारत में कृषि आधारित उद्योगों के महत्व का अध्ययन करना।
3. कृषि-औद्योगिक विकास के लिए अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और तकनीकी सहायता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र विश्लेषणात्मक विधि पर आधारित है।

भारत में कृषि आधारित उद्योगों का महत्व

भारत में कृषि आधारित उद्योगों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह निम्नलिखित कर्म से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं : —

1. यह उद्योग भूमिहीन ग्रामीण श्रमिकों और दूर दराज व अविकसित क्षेत्रों में रहने वाले समुदायों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करते हैं।
2. यह औद्योगिक उत्पादन के वृद्धि में योगदान करते हैं।
3. कृषि पर निर्भरता को कम करके ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के विकास और स्थिरता को प्रोत्साहित करते हैं।
4. एक स्थाई आय और आजीविका का स्रोत प्रदान करके गरीबी को कम करते हैं।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर को बेहतर बनाते हैं।
6. देश के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा अर्जित करने में मदद करते हैं।
7. कृषि और उद्योगों में संतुलित विकास को बढ़ावा देते हैं।

8. आय और संपत्ति की असमानता को कम करने में योगदान देते हैं।
9. जल्दी खराब होने वाले उत्पादों की बर्बादी को कम करते

भारत में कृषि-आधारित उद्योगों की स्थिति और संभावनाएं

चूंकि भारत मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है, इसलिए कृषि से संबंधित व्यवसाय एक बहुत बड़ा क्षेत्र है। 2020 के आंकड़ों के अनुसार, भारत की कृषि क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 18% योगदान है। इसके अलावा, भारत की लगभग 42% आबादी केवल कृषि क्षेत्र में कार्यरत है। विभिन्न कारणों से हर साल कृषि में लगे लोगों का प्रतिशत घट रहा है, फिर भी यह अब भी सबसे बड़ा उद्योग है, जो सबसे अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

कृषि-आधारित उद्योगों को भारतीय अर्थव्यवस्था के भविष्य के क्षेत्र के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि इसमें व्यापक विकास की संभावनाएं हैं, इसका सामाजिक- आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण है— विशेषकर रोजगार और आय सृजन के संदर्भ में— और यह आर्थिक मंदी का भी प्रभावी ढंग से सामना कर सकता है। इसके अलावा, लगभग 70% आबादी कृषि और कृषि व्यवसाय पर निर्भर है।

केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय के 2016–17 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत की कृषि अर्थव्यवस्था ने 2009–10 से 2013–14 के बीच उल्लेखनीय विकास किया। कुछ अनुमानों के अनुसार, विकसित देशों में एग्रो-प्रोसेसिंग (कृषि प्रसंस्करण) क्षेत्र में कुल श्रमिकों का लगभग 14% कार्यरत है, जबकि भारत में यह आंकड़ा केवल लगभग 3% है।

भारत में कृषि-आधारित उद्योगों ने वर्ष 2021 में 15% की वृद्धि दर्ज की, और इस क्षेत्र में टिकाऊ प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए प्रयास भारत के सतत विकास लक्ष्य (SDG) एजेंडा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।

इसी संदर्भ में, CRB ने उन संगठनों के साथ साझेदारी की है जो भारत में पराली जलाने की समस्या, टिकाऊ कृषि उत्पादों को बढ़ावा देना, मजबूत सामाजिक प्रथाओं को प्रोत्साहित करना, खाद्य अपव्यय और नुकसान को कम करना जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने की दिशा में काम कर रहे हैं।

अतः अब यह बहुत अवश्यक हो गया है की अन्य उद्योगों की तरह, कृषि आधारित उद्योगों को भी मानकों का पालन करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिससे मूल्य श्रृंखला में पारदर्शिता और अनुरूपता सुनिश्चित की जा सके।

उपरोक्त आँकड़े यह दर्शाते हैं कि विकासशील देशों में इस क्षेत्र में भारी विकास की संभावनाएं हैं।

कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्र की वृद्धि में समस्याएँ और सीमाएँ

- फसल की मौसमी प्रवृत्ति।
- कच्चे माल की उपलब्धता कमजोर होती है और खेत से प्रोसेसिंग प्लांट तक ले जाने के दौरान भारी नुकसान होता है।
- अनुचित या पुरानी हैंडलिंग और सहायक उपकरण।
- प्रसंस्कृत उत्पादों की गुणवत्ता खराब और अस्थिर होती है।
- उपचार सुविधाओं और उपकरणों का कुशलतापूर्वक उपयोग नहीं हो पाता।
- प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी और कुशल खाद्य तकनीशियनों की उपलब्धता नहीं होती। कच्चे माल की आपूर्ति असंगत और अपर्याप्त होती है।
- अच्छी स्वच्छता और साफ-सफाई की प्रक्रियाओं की कमी। अनुचित पैकेजिंग सामग्री और अत्यधिक पैकेजिंग लागत।
- बाज़ार विकास का कमजोर या पूरी तरह से अभाव।
- कृषि क्षेत्र के लिए तकनीकी सहायता की कमी।
- व्यावसायीकरण के बाद प्रसंस्करण इकाइयों का अपर्याप्त प्रबंधन।

इन चुनौतियों पर विभिन्न स्थानीय और क्षेत्रीय मंचों पर बार-बार चर्चा की गई है और कई व्यावहारिक सुझाव भी दिए गए हैं। फिर भी, अधिकांश मामलों में इन निर्देशों का पालन नहीं होता। इसका मुख्य कारण यह है कि एक सुविचारित और योजनाबद्ध एग्रीबिज़नेस (कृषि-उद्योग) विकास रणनीति का अभाव है।

ऐसे विशिष्ट अवरोधों की गहराई से जांच करना उपयोगी हो सकता है, ताकि इनके समाधान के लिए ठोस और प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

कच्चे माल की उपयुक्तता और उपलब्धता

भारत के कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्र की वर्तमान स्थिति उपयुक्त घरेलू कच्चे माल की कमी या उनकी वांछित मात्रा में उपलब्धता के कारण अभी भी बहुत बेहतर नहीं है। भारत विभिन्न प्रकार की विशिष्ट कृषि वस्तुओं से समृद्ध है, जिनमें से कई का उपयोग कृषि प्रसंस्करण में अत्यंत सफलतापूर्वक किया जाता है। आमतौर पर प्रसिद्ध फलों का उपयोग जैम, जेली, नेक्टर और पेय पदार्थों के उत्पादन में किया गया है। जड़ी-बूटियाँ, मसाले और कंद मूल वाली सब्जियाँ भी व्यापक रूप से प्रयुक्त होती हैं।

हालाँकि, यह कहा गया है कि इन वस्तुओं में से कुछ ही साल भर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती हैं, जिससे एक सफल कृषि-प्रसंस्करण आधारित अर्थव्यवस्था की स्थापना कठिन हो जाती है। लेकिन फसलों की मौसमी प्रवृत्ति और प्रसंस्करण के लिए कच्चे माल की उपलब्धता के बीच स्पष्ट अंतर किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, हमने अर्ध-प्रसंस्कृत वस्तुओं जैसे तीखी मिर्च और सीवीड के लिए एक भंडारण पद्धति विकसित की, जिससे इन्हें पूरे वर्ष संसाधित किया जा सके।

कई विशिष्ट उष्णकटिबंधीय फलों में विशाल प्रसंस्करण संभावनाएँ हैं, लेकिन हर वर्ष उन्हें वह ध्यान नहीं दिया जाता जिसके वे योग्य हैं। इस बाधा को मूलभूत और अनुप्रयुक्त अनुसंधान के माध्यम से पार किया जा सकता है, जिससे स्थानीय संसाधनों के बेहतर और नवाचारी उपयोग के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

एक संभावित समाधान राज्य-स्वामित्व वाले कृषि फार्मों की स्थापना हो सकती है, जहाँ कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र की मांगों को पूरा करने के लिए चयनित कच्चे माल का उत्पादन और क्रमिक विकास किया जा सके। एक अन्य विकल्प यह है कि ऐसी प्रक्रियाएँ विकसित की जाएँ, जो यह सुनिश्चित करें कि किसानों को पूरे वर्ष पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध हो।

कृषि आधारित उद्योगों के भावी उत्थान के लिए अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और तकनीकी सहायता

कृषि प्रसंस्करण उद्योग की वृद्धि में अन्य प्रमुख बाधाओं में अनुसंधान और प्रौद्योगिकी का उपयुक्त उपयोग न होना, योग्य श्रमिकों की कमी, और तकनीकी, प्रबंधन तथा विपणन सहायता का अभाव शामिल है।

न तो सार्वजनिक और न ही निजी कृषि-प्रसंस्करण क्षेत्रों ने सबसे प्रभावी अनुसंधान में पर्याप्त निवेश किया है, और न ही उन्होंने उपयुक्त और नवीनतम तकनीकों को सक्रिय रूप से अपनाया और लागू किया है। ये समस्याएँ छोटे किसानों के लिए और भी गंभीर हो जाती हैं, जिनके पास आमतौर पर नए प्रोसेस, मानव संसाधन, प्रबंधन या नवाचार में निवेश करने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन या ऋण सुविधा नहीं होती।

कई बार यह कहा गया है कि खाद्य तकनीशियनों की सेवाएं आवश्यक हैं, ताकि वे सार्वजनिक और निजी खाद्य प्रसंस्करण कंपनियों में स्थानीय लोगों को नए विकास, तकनीकों और स्थानीय उत्पादों के उपयोग के तरीकों के बारे में प्रशिक्षण दे सकें।

इसलिए, बुनियादी प्रसंस्करण सिद्धांतों, स्वच्छता, सफाई, गुणवत्ता और मानकों, उत्पाद विकास, लेबलिंग और पैकेजिंग में प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यंत आवश्यक है। यदि आप चाहें तो इससे प्रभावी ढंग से निपटा जा सकता है।

निष्कर्षतः, खाद्य प्रसंस्करण में मानकों की स्थापना के लिए एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे यह उद्योग और संबंधित संस्थाएँ विकसित होती हैं, वैसे वैसे प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक संवृद्धि में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इस क्षेत्र में पेशेवर

विकास को किसी भी कृषि औद्योगिक/खाद्य प्रसंस्करण विकास कार्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाना चाहिए।

यह वास्तविकता इस बात की माँग करती है कि राष्ट्रीय कृषि एवं कृषि- औद्योगिक विकास कार्यक्रमों में इसे विशेष महत्व और विचार दिया जाए।

प्रबंधन, वित्त और विपणन सहायता प्रणाली

एक स्थायी कृषि-औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना में एक महत्वपूर्ण बाधा वित्तीय संसाधनों की कमी और कृषि प्रसंस्करण व कुटीर उद्योगों में लगे अधिकांश व्यक्तियों में उद्यमिता और प्रबंधन से संबंधित शिक्षा का अभाव है। आमतौर पर, इन उद्यमियों को तकनीकी संचालन के पहलुओं में बहुत कम या कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला होता है, और उन्हें संगठन, विपणन तथा लघु व्यवसाय प्रबंधन का भी सीमित ज्ञान होता है।

इसके अतिरिक्त, प्रमुख कृषि औद्योगिक कंपनियों की तुलना में छोटे प्रसंस्करणकर्ताओं को सरकार से बहुत कम और अपर्याप्त समर्थन प्राप्त होता है। वे अक्सर उन योजनाओं और परियोजनाओं में शामिल नहीं हो पाते जो विशेष रूप से उनके विकास को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई हैं।

इसके विपरीत, विपणन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में, देशी उत्पादों को घरेलू बाजार में विविध प्रकार के आयातित उत्पादों से मुकाबला करना पड़ता है। ये छोटे उद्यमी अक्सर प्रतिस्पर्धियों के उत्पादों का विश्लेषण करते हैं, आवश्यक तकनीक अपनाते हैं, पैकेजिंग में सुधार करते हैं और गुणवत्ता तथा मूल्य के आधार पर प्रतिस्पर्धा करते हैं।

ऐसी व्यक्तिगत सफलताओं का श्रेय उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति को दिया जा सकता है, जो एक ऐसे वातावरण में भी आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं जो कृषि प्रसंस्करण उद्योग के विकास और विस्तार की आवश्यकता को लेकर उदासीन प्रतीत होता है।

निष्कर्ष

उपभोक्ता शिक्षा और बाजार अनुसंधान की कमी भी इस उद्योग की प्रगति में एक बड़ी बाधा है। स्थानीय उपभोक्ताओं को अक्सर एक 'कैप्टिव मार्केट' (बंधित बाजार) के रूप में देखा गया है, जहाँ उपभोक्ता शिक्षा और स्थानीय रूप से प्रसंस्कृत उत्पादों के विपणन में न्यूनतम निवेश किया जाता है। प्रचार-प्रसार के लिए बहुत कम संसाधन आवंटित किए जाते हैं। परिणामस्वरूप, मानकों, गुणवत्ता नियंत्रण, पैकेजिंग और उत्पाद प्रस्तुति जैसे महत्वपूर्ण तत्वों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता।

भारत में कृषि-आधारित उद्योग देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, जो रोजगार प्रदान करने, राजस्व सृजन, औद्योगिक कच्चे माल और तैयार उत्पादों की आपूर्ति तथा क्षेत्रीय विकास में योगदान देकर सभी वर्गों की सेवा करते हैं। कृषि क्षेत्र के विस्तार ने देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कृषि उत्पादों के निर्यात की दिशा में भारी संभावनाएं मौजूद हैं, जो भविष्य में देश के लिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकती हैं। भविष्य में कृषि निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कुशल और प्रभावशाली रणनीतियाँ अपनाना अत्यंत आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. जी०के० चढ़ा और पी०पी० साहू : भारत में लघु स्तर के कृषि आधारित उद्योग, इंडियन जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स, खण्ड-58, अंक-3, 2003, पृ०सं०-518-543
2. एस० रत्ना कुमारी और सी. लक्ष्मीकांत रेड्डी, भारत में कृषि आधारित उद्योगों का प्रदर्शन : एक समालोचनात्मक विश्लेषण। आई०ओ०एस०आर० जर्नल ऑफ़ इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस, खंड-2, अंक-4, 2014, पृ०सं०-15-25
3. सी० परमासीवन और आर० पशुपति, भारत में कृषि आधारित उद्योगों का प्रदर्शन, नेशनल जर्नल आफ एडवांस रिसर्च, खण्ड-2, अंक-6, 2016, पृ०सं०-25-28
4. राम बूटा और एस०पी० सिंह, भारत में कृषि आधारित उद्योगों का प्रदर्शन और प्रगति, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड रिसर्च एंड इन्नोवेटिव आईडियाज इन एजुकेशन, खण्ड-2, अंक-6, 2016

5. शिवाकांत सिंह, कृषि आधारित उद्योगों की समस्याएं : उत्तर प्रदेश के चीनी उद्योगों के विशेष संदर्भ में, इंटरनेशनल जर्नल का रिव्यू एंड रिसर्च इन सोशल साइंसेज, खण्ड-2, अंक-3, 2014, पृ0सं0-194-196
6. एस0के0 ओझा, कृषि प्रौद्योगिकी, बौद्धिक प्रकाशन, 2019, पृ0सं0-308
7. गौतम ऋतुराज (2012), जैविक खेती से पर्यावरण संरक्षण, शोध पत्रिका रिसर्च डिस्कवर, अंक-6, पृ0सं0-134 से 136
8. ओझा, प्रवीण (2016), नवीन आर्थिक नीति, शोध पत्रिका, जर्नल ऑफ एशिया फॉर डेमोक्रेसी एंड डेवलपमेंट, पृ0सं0-7, 124-127
9. डॉ0 सोनी अशोक (2011), मध्य प्रदेश में कृषि उद्योग एवं आर्थिक विकास, शोध पत्रिका, जनरल ऑफ एशिया फॉर डेमोक्रेसी एंड डेवलपमेंट, पृ0सं0-4, 170-175
10. वेंकैया वी0 (2020), कृषि आधारित उद्योगों का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, हिमालय पब्लिशिंग हाउस बॉम्बे, पृ0सं0-18
11. राजीव खोसला (2013), भारतीय राज्यों में कृषि प्रसंस्करण उद्योगों की दक्षता में अंतर-उद्योग भिन्नताएँ, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, 2013; खण्ड-1, संख्या-3, पृ0सं0-1-21
12. कुमार, आर0 एवं यादव, एस0 (2019), ग्रामीण औद्योगीकरण में सरकारी नीतियों की भूमिका, जर्नल ऑफ रूरल इकोनॉमिक्स, पृ0सं0-67-78
13. रेड्डी, एम0 एवं कुमार, एस0 (2020), भारतीय कृषि व्यवसायों के लिए विपणन और वितरण से जुड़ी चुनौतियाँ, एग्रीकल्चरल मार्केटिंग रिव्यू, पृ0सं0-21-33
14. गुप्ता, वी0 (2021), कृषि उद्योगों के लिए वित्तीय समर्थन : सरकारी पहलों का मूल्यांकन, रूरल फाइनेंस जर्नल, पृ0सं0-95-107
15. शर्मा, पी0 (2020), भारत में कृषि-आधारित उद्योगों की वृद्धि में चुनौतियाँ, इंडियन जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, पृ0सं0-45-58